शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

भारतीय ग्रामीण संस्कृति व शिक्षा में वैश्वीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कु० पूजा
शोधार्थी
ईमेलः *drpoojaariya1995@gmail.com*

प्राप्तिः 23.02.2022
स्वीकृतः 17.03.2022

डॉ० सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर
रघुनाथ गर्ल्स परास्नातक डिग्री कॉलेज, मेरठ

सारांश

भारत में समुदायों और क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक अन्योन्याश्रयता को परिभाषित करने वाले दृश्य और अदृश्य दोनों के संबंध, जो ऐतिहासिक रूप से अस्तित्व में हैं, राष्ट्रीय पहचान को खतरे में डालने के बजाय सुदृढ़ करते हैं। वैश्वीकरण का प्रभाव भारत की संस्कृति पर बहुत अधिक है। हम कारण, प्रगति और विज्ञान के नाम पर वैश्वीकरण शब्द का शोषण कर रहे हैं लेकिन हम यह भूल रहे हैं कि यह हमारी संस्कृति है जो हमें किसी अन्य देश से अलग करती है। भारत की एक समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है और इसकी संस्कृति का गौरव पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। वैश्वीकरण ने न केवल भारत में पश्चिमीकरण को जन्म दिया है, बल्कि इसके विपरीत भारतीय संस्कृति ने भी विश्व स्तर पर अपना प्रभाव फैलाया है। सर्वेक्षण से यह तथ्य प्राप्त होते हैं कि 32! युवा ग्रामीण ऑनलाइन खरीदारी और पिज्जा,बर्गर व अन्य पर खर्च करते हैं तथा 48! युवा वर्ग इस तथ्य पर सहमत है कि ऑनलाइन गेम, चौटिंग वीडियो आदि का प्रयोग कर दुनिया के किसी भी स्थान से संपर्क साध सकते हैं जबकि 20! युवा वर्ग वैश्वीकरण के चलन को अस्वीकारता है शोध पत्र के माध्यम से 56! युवा सहमत हैं कि वैश्वीकरण के प्रभाव से संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है वही 34! ग्रामीण युवा विपरीत किसी भी प्रकार के परिवर्तन को नकारते हैं तथा 10! युवा वैश्वीकरण के प्रभाव के विषय में निरुत्तर हैं।

मुख्य बिन्दु

वैश्वीकरण, संस्कृति, प्रभाव, शिक्षा।

परिचय

वैश्वीकरण वास्तव में लोगों को उनके जीवन शैली, संस्कृति, स्वाद, फैशन, वरीयताओं आदि के संबंध में प्रभावित करता है। इसने लोगों के जीवन पर अच्छे और बुरे प्रभाव डाले हैं। महान अवसरों के सपने के साथ, लोग पूर्व से पश्चिम की ओर और इसके विपरीत चले जाते थे। लेकिन, पूरी दुनिया में वैश्विक वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप देश–प्रत्यावर्तन हुआ। शोधों ने साबित कर दिया था कि कई विदेशी मूल के श्रमिकय मुख्य रूप से चीन और भारत से, बेहतर नौकरी के अवसरों के लिए घर लौटने पर विचार किया है। वैश्वीकरण ने गृह निर्माण, खेती, पशुधन, पशुपालन, हस्तशिल्प, हथकरघा आदि में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को कमजोर कर दिया है। वैश्वीकरण क्षेत्रीय संस्कृति के लिए विकल्प उपलब्ध कराता है। वैश्वीकरण घनिष्ठ रूप में आधुनिकता से जुड़ी प्रक्रिया है। सामान्यतया ऐसा समझा

जाता है कि यह पश्चिम द्वारा फैलाया जा रहा है। यह तकनीकि, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक एक ही समय घटित होने वाली प्रक्रियाओं के माध्यम से एकता और मानकीकरण को प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- ग्रामीण लोगो की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्यन करना ।
- भारतीय संस्कृति, शिक्षा पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना ।

साहित्य की समीक्षा

सांस्कृतिक वैश्वीकरण आर्थिक और राजनीतिक वैश्वीकरण दोनों से जुड़ी एक घटना है। यह वैश्विक स्तर पर मूल्यों, विचारों, मानदंडों, सामान्य ज्ञान, जीवन शैली, भाषा, व्यवहार और प्रथाओं के निर्यात, आयात, साझाकरण, पुनर्निर्माण और अनुकूलन को संदर्भित करता है। समाजशास्त्रियों ने पाया है कि सांस्कृतिक वैश्वीकरण उपभोक्ता वस्तुओं में वैश्विक व्यापार के माध्यम से होता है, जो जीवनशैली के रुझान, लोकप्रिय मीडिया जैसे फिल्म, टेलीविजन, संगीत, कला और ऑनलाइन साझा सामग्री को फैलाता हैय अन्य क्षेत्रों से उधार शासन के रूपों के कार्यान्वयन के माध्यम से जो रोजमर्रा की जिंदगी और सामाजिक पैटर्न को दोबारा बदलते हैंय व्यापार और काम करने की शैलियों का प्रसारय और जगह से लोगों की यात्रा से। सांस्कृतिक वैश्वीकरण पर तकनीकी नवाचार का एक बड़ा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यात्रा, मीडिया उत्पादन और संचार प्रौद्योगिकी में हालिया प्रगति ने दुनिया भर में व्यापक पैमाने पर सांस्कृतिक बदलाव लाए हैं। (जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलर रिसर्च इन एलीट एजुकेशन)

राजनीतिक वैज्ञानिक आर.ई. वार्ड और रुस्टो ने वैश्वीकरण की कुछ विशेषताओं को प्रदान करने का प्रयास किया है। उनका तर्क है कि एक आधुनिक राजनीति सरकारी संगठन की अत्यधिक विभेदित और कार्यात्मक रूप से विशिष्ट प्रणाली है। इस सरकारी ढांचे के भीतर उच्च स्तर का एकीकरण है। निर्णय तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों द्वारा संचालित होते हैं और अत्यधिक कुशल होते हैं। आरोपण के स्थान पर उपलब्धियाँ राजनीतिक भूमिकाओं के आवंटन का आधार बनती हैं। न्यायिक और नियामक तकनीक मुख्य रूप से धर्मनिरपेक्ष और अवैयक्तिक कानून व्यवस्था पर आधारित हैं।

कार्ल मार्क्स का डेनियल बेला को लेखन और मैक्स वेबर से लेकर सैमुअल हंटिंगटन तक ने सांस्कृतिक परिवर्तनों का अनुमान लगाया है विदेशी आक्रमणों के प्रभाव से समाजों पर आ गए हैं, घुसपैठ और पैठ। इन सभी ने न केवल सांस्कृतिक सुविधा प्रदान की है परिवर्तन लेकिन पारंपरिक के सांस्कृतिक वैश्वीकरण के लिए जिम्मेदार हैं समाज। वैश्वीकरण से आशय सम्पूर्ण विश्व का परस्पर सहयोग एवं समन्वय से एक बाजार के रूप मे कार्य करने से हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं के एक देश से दूसरे देश मे आने एवं जाने के अवरोधों को समाप्त कर दिया जाता हैं।

वैश्वीकरण को अनेक नामों से भी पुकारा जाता हैं, यथा भूमण्डलीकरण, जागतीकरण, वैश्वायान, पृथ्वीकरण, वैश्वीकरण आदि। एन्थनी गिडिन्स के अनुसार, वैश्वीकरण विश्वव्यापी सामाजिक सम्बन्धों का सघनीकरण है।

वैश्वीकरण वस्तुतः व्यापरिक क्रिया–कलापो विशेषकर विपणन संबंधी क्रियाओं का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना हैं जिसमें संपूर्ण विश्व बाजार को एक ही क्षेत्र के रूप में देखा जाता हैं।

गिडेन्स के अनुसार,'' वैश्वीकरण एक वह प्रक्रिया है, जो आधुनिकता से जुड़ी संस्थाओं का सार्वभौमिक दिशा की ओर रूपान्तरित करती है।''

दूसरे शब्दों में वैश्वीकरण वह प्रक्रिया हैं, जिसमें विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है और व्यापार देश की सीमाओं में प्रतिबंधित न रहकर विश्व बाजारों में निहित तुलनात्मक लागत सिद्धांत के लाभों को प्राप्त करने सफल हो जाता हैं। साधारण शब्दों मे वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत में शिक्षा, संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभावः वैश्वीकरण के कारण शैक्षिक क्षेत्र में व्यापक प्रभाव देखा जाता है जैसे कि साक्षरता दर उच्च हो जाती है और विदेशी विश्वविद्यालय विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग कर रहे हैं। भारतीय शैक्षिक प्रणाली सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करती है और यह विकासात्मक शिक्षा में नए प्रतिमानों को विकसित करने के अवसर प्रदान करती है। औपचारिक, गैर–औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच का अंतर तब मिट जाएगा जब औद्योगिक समाज से सूचना समाज में कदम रखा जाएगा। वैश्वीकरण नए उपकरणों और तकनीकों को बढ़ावा देता है जैसे ई–लर्निंग, फ्लेक्सिबल लर्निंग, डिस्टेंस एजुकेशन प्रोग्राम और ओवरसीज Vsuax A oSohd j.kdhçfØ; kdsl kFk] Vsyhfot u dhigp "kgjhvkcknhds20! (1991) से बढ़कर शहरी आबादी के 90!(2009) तक पहुँच गई है। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में उपग्रह टेलीविजन का बड़ा बाजार है। शहरों में, इंटरनेट की सुविधा हर जगह है और ग्रामीण क्षेत्रों तक भी इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार है। भारत के शहरी क्षेत्रों में वैश्विक खाद्य श्रृंखला रेस्तरां की वृद्धि हुई है। हर शहर में अत्यधिक मल्टीप्लेक्स मूवी हॉल, बड़े शॉपिंग मॉल और उच्च वृद्धि वाले आवासीय देखे जाते हैं। भारत में मनोरंजन क्षेत्र का एक वैश्विक बाजार है। (दा इंडियन वायर मार्च 11, 2019).

अनुसंधान तकनीकी

जानकारी की पूर्ति के लिए 100 उत्तरदाताओं से अवलोकन और साक्षात्कार अनुसूची तकनीक का उपयोग करके वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा एकत्र किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग किया गया था। 18–30 वर्ष आयु ,वर्ग, लिंग व सभी जातियों से जानकारी एकत्र की गई है।

अध्ययन का क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन मेरठ तहसील के राजपुरा प्रखंड स्थित बाहरी ग्राम (दतवाली) पर केन्द्रित है। यह दातावाली गेसुपुर पंचायत के अंतर्गत आता है। यह मेरठ संभाग का है। गांव की दूरी 12 किमी है। गढ़ रोड से अंदर। इस गांव के शहरी क्षेत्र से निकटता के कारण, इस गांव में चिकित्सा सुविधाएं, व्यवसाय, परिवहन सुविधाएं आदि जैसी पर्याप्त सुविधाएं हैं।

परिणाम

भारतीय ग्रामीण संस्कृति, शिक्षा में वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने पर प्रमुख परिणाम प्राप्त हुए वैश्वीकरण की प्रक्रिया अपने अंदर कुछ ऐसी विशेशताओं को संलिप्त किये हुए है, जिससे हमारा समाज एक नई प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति को संस्थापित करने की ओर प्रवृत्त हो रहा है।

1. भौगोलिक दूरियों का सिमटना

वैश्वीकरण की प्रक्रिया मे यातायात एवं संचार के साधनों मे क्रांतिकारी विकास के फलस्वरूप भौगोलिक दूरियाँ सिमट गई है। फोन, फैक्स, कंप्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से समूचे विश्व से ग्रामीण अपने घर से ही संपर्क कर सकते है।

2. एक नई संस्कृति का उभरना

वैश्वीकरण की प्रक्रिया मे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की दूरदराज तक पहुंच ने एक नई विश्व संस्कृति को उभारा है। जीन्स, टी–शर्ट, फास्ट–फूड, पॉप संगीत, नेट पर चेटिंग आदि तत्वों से बनी एक ऐसी संस्कृति सृजित हुई है, जिससे विश्व के हर देश का ग्रामीण युवा प्रभावित हुआ है।

3. उपभोक्तावाद को बढ़ावा

वैश्वीकरण मे उपभोक्तावाद तथा बाजारीकरण को बढ़ावा देने के गुण है। ग्रामीण क्षेत्र में निरक्षण करने पर प्राप्त होता है कि ग्रामीण युवा अब ऑनलाइन खरीदारी करते है।

4. शिक्षा का विश्वव्यापीकरण

भूमण्डलीकरण या वैश्विकरण से शिक्षा का भी विश्वव्यापीकरण हो गया है। इसमें विकासशील देशों के शिक्षा संस्थानों का पाठ्यक्रम विश्वस्तरीय हो गया है, गांव के सर्वे से पता चलता है कि यहाँ युवा बड़े–बड़े शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालय आदि में शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

5. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की सक्रियता

ग्रामीण क्षेत्र में निरक्षण करने पर प्राप्त होता है कि बहुउद्देश्यीय कंपनी यहां निवेश कर रही है इस प्रक्रिया मे बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सक्रियता बढ़ गई है। ये कम्पनियाँ पहले सिर्फ उत्पादित वस्तुओं, सेवा, तकनीक, पूँजी आदि की आवाजाही मे मदद करती थी, किन्तु अब भिन्न–भिन्न देशों मे प्रबन्धकों, विशेषज्ञों, कुशल तथा अर्द्धकुशल श्रमिकों आदि की नियुक्तियों मे भी अहम् भूमिका का निर्वाह करती है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने भारत और भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। इसने मानव सभ्यता पर जबरदस्त प्रभाव डाला है। वैश्वीकरण से निपटने की रणनीतियाँ वैश्वीकरण विरोधी दृष्टिकोण में क्रांति लाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। क्या वैश्वीकरण हमारी संस्कृति के लिए वरदान या अभिशाप है? यह वास्तव में हम सभी के लिए विचार का प्रश्न है। भारतीय संस्कृति ने निश्चित रूप से प्रमुख संस्कृतियों के सापेक्ष अपने स्वयं के सापेक्ष को धारण करने में सबसे कम किया है, जैसा कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के सापेक्ष किया है। भारत की सांस्कृतिक पहचान पश्चिमी प्रभावों से नष्ट होने वाली नहीं है, भले ही हम इस सीमाहीन दुनिया में अधिक सक्रिय खिलाड़ी बन गए हैं। लंबे समय से यह शिकायत रही है कि भारतीय युवा अमेरिकी और यूरोपीय संस्कृतियों से अत्यधिक प्रभावित हैं। भारत तेजी से अर्थव्यवस्था, भोजन और संस्कृति के मामले में एक वास्तविक वैश्विक वातावरण बन रहा है, यह सुनिश्चित करने के लिए क्या आवश्यक है कि हमारे युवा भारतीय होने की समृद्धि को न भूलें? दुनिया भर में संस्कृति का सामान्य ज्ञान होने और विश्व स्तर पर होने वाली घटनाओं और घटनाओं के बारे में कुछ सकारात्मकता के साथ, अभी भी प्रमुख नकारात्मक प्रभाव हमारे देश के लिए काफी खतरनाक

हैं। इसलिए, हमें अपने देश के गौरव को बनाए रखने और अपनी सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए वैश्वीकरण प्रक्रिया के साथ और अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता हैं।

संदर्भ

1. (1996). देश–विदेश पर वैश्वीकरण का सच पत्रिका विशेषांक 36
2. (2014). दादा इफेक्ट ऑफ ऑर्गेनाइजेशन एंड ग्लोबलाइजेशन इंडियन सोसाइटी इंटरनेशनल जनरल ऑफ एडवांस रिसर्च इन साइंस।
3. कुमार, डॉ. प्रदीप. (2017). भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य समाज संस्कृति और भाषा।
4. भार्गव, नरेश. (2011). वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य।
5. होता, प्रोफेसर अरुण. (2017). भूमंडलीकरण और भारतीय संस्कृति।
6. सिंह, डॉ. निर्मल., गौतम, ऋषि. (2009). ग्रामीण समाज और संचार।
7. (2002). सामाजिक समस्या,, रावत पब्लिके'ान, जयपुर।
8. www.wikipedia.com.
9. www. ruraltrendreport.com.